मुंशी प्रेमचंद का साहित्य सामाजिक सरोकार का साहित्य- डॉ येरावार

मुंशी प्रेमचंद की 143वीं जयंती मनाई

लोकमत समाचार सेवा

देगलूर: डॉ संतोष येरावार ने कहा कि हिंदी साहित्य साम्राट मुंशी प्रेमचंद का साहित्य सामाजिक सरोकार का साहित्य है. जीवन की वास्तविकता से प्रेमचंद का साहित्य हमें अवगत कराता है. उनके साहित्य से जीवन जीने की प्रेरणा मिलती है.

स्थानीय देगलूर महाविद्यालय में हिंदी विभाग द्वारा सोमवार को मुंशी प्रेमचंद की 143वीं जयंती मनाई गई. इस अवसर पर व्याख्यान का आयोजन किया गया था. कार्यक्रम की शुरुआत मुंशी प्रेमचंद की तस्वीर का पूजन कर की गई. व्याख्यान समारोह के व्याख्याता हिंदी विभाग प्रमुख डॉ संतोष येरावार थे. कार्यक्रम के अध्यक्ष स्थान पर प्रा सर्जेराव रणखांब थे.

डॉ संतोष येरावार ने अपने मंतव्य में कहा कि प्रेमचंद का साहित्य सामाजिक सरोकार का साहित्य है. जीवन की वास्तविकता से प्रेमचंद जी का साहित्य हमें अवगत कराता है. उनके साहित्य से जीवन जीने की प्रेरणा मिलती है. सामाजिक समस्या, मानवीय संवेदना, चरित्र निर्माण, स्वाधीनता आंदोलन, राष्ट्र निर्माण आदि प्रेमचंद के साहित्य की विशेषता है.

प्रा सर्जेराव रणखांब ने कहा कि आज का छात्र भौतिक जीवन जीते समय साहित्य और वाचन संस्कृति से कोसों दूर जा रहा है. हमें प्रेमचंद, महात्मा फुले, शाहू, आंबेडकर आदि महापुरुषों का साहित्य पढ़ना चाहिए. वह हमेशा हमें प्रेरणा देते हैं.

इस अवसर पर बडी संख्या में महाविद्यालय छात्र-छात्राएं उपस्थित थे. कार्यक्रम का संचालन डॉ व्यंकट खंदकुरे ने किया तो आभार डॉ शेखर परवीन ने व्यक्त किया.

देगलूर महाविद्यालय में मुंशी प्रेमचंद जयंती दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में मार्गदर्शन करते हुए हिंदी विभाग प्रमुख डॉ संतोष येरावार. साथ हैं प्रा सर्जेराव रनखांब व छात्र व छात्राएं.

हिंदी के महान साहित्यकार थे मुंशी प्रेमचंद

देगलूर: हिंदी साहित्य के अनेक साहित्यकारों में अपनी अलग पहचान बनाने वाले मुंशी प्रेमचंद महान साहित्यकार थे. उन्होंने अनेक कहानियां, उपन्यासों द्वारा तथा हंस पत्रिका के संपादक के रूप में अपनी कलम के माध्यम से समाज की समस्याओं को सबके सामने लाने का कार्य किया. यह बात स्थानीय धूंडा महाराज देगलूरकर महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ विजय कुलकर्णी ने कही. वे हिंदी जगत के साहित्यकार मुंशी प्रेमचंद की जयंती पर आयोजित कार्यक्रम में अपने अध्यक्षीय भाषण बोल रहे थे. उन्होंने कहा की समाज में स्थित विधवा समस्या, किसान समस्या, अनमेल विवाह, जाति-पाति व्यवस्था ऐसे अनेक समस्या को वे अपने साहित्य के माध्यम से समाज के सामने लाकर उस पर कड़ा प्रहार किया. अपने प्रस्तावना संबोधन में हिंदी विभाग प्रमुख डॉ अभिमन्यु पाटील ने प्रेमचंद के साहित्य जगत को छात्रों के सामने रख दिया. कार्यक्रम का संचालन हिंदी विभाग की डॉ पुष्पा गायकवाड़ ने किया. कार्यक्रम में बड़ी संख्या में छात्र और प्राध्यापक उपस्थित थे.

Scanned with OKEN Scanner